B.TECH | M.TECH
BCA | MCA
BBA | MBA
MBA EXECUTIVE | BPT
MPT | PH.D

NBT नवभारत टाइम्स By THE TIMES OF INDIA

INR 72 LACS
Study Abroad Program in Singapore, Australia, UK & US.

Aatmanirbhar Bharat: अब समय आ गया है कि 'धरती के नीचे की हरित क्रांति' हो, अनिल अग्रवाल का संदेश समझिए

Curated By: शिशिर चौरसिया | नवभारत टाइम्स • 27 May 2026, 7:30 am IST

Subscribe YouTube 12M

Energy Security: वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने एनर्जी एवं कुछ अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में आत्म-निर्भरता पाने के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। उनका कहना है कि प्राकृतिक संसाधनों में आत्मनिर्भर बनने के लिए कई मोर्चों पर एक साथ काम करने की जरूरत है।

धरती के नीचे की हरित क्रांति हो**(फोटो- नवभारतटाइम्स.कॉम)**

Advertisement

आज का AQI > नई दिल्ली
तापमान वायु गुणवत्ता
79 AQI
PM2.5 25 µg/m³
मॉडरेट
Powered By AQI

र में इस समय कच्चे तेल (Crude Oil) की कीमतें घट रही हैं। मानक ब्रेंट क्रूड की प्रति बैरल क मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे है। लेकिन भारत में इन दिनों पेट्रोल-डीजल और सीएनजी की से में वेदांता ग्रुप (Vedanta Group) के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने प्राकृतिक संसाधनों में लिए एंट्रप्रेन्योरशिप, प्राइवेटाइजेशन , एक्सप्लोरेशन और भरोसे पर आधारित शासन व्यवस्था vernance) को बढ़ावा देने का संदेश दिया है।

Advertisement

आवश्यकता

रिए अक्सर संदेश देने वाले अनिल अग्रवाल का कहना है कि धरती के नीचे ढेरों संसाधन छुपे करने और क्षमता के उपयोग के लिए उन्होंने एक राष्ट्रीय मिशन की आवश्यकता पर जोर में बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारत के पास मजबूत भू-वैज्ञानिक क्षमता, उद्यमशील प्रतिभा मौजूद है, जो देश को बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों में आत्मनिर्भर बना सकती है।

SPONSORED LINKS BY TABOOLA

Join the Ultimate Trader Cup
Ultima Markets
Join Now

हरित क्रांति से सीखें

कभी भारत में खाने के लिए पर्याप्त अनाज नहीं उगते थे। लेकिन सरकार ने 'हरित क्रांति' के जरिए इसमें आत्मनिर्भरता प्राप्त की। इसी हरित क्रांति का उदाहरण देते हुए अनिल अग्रवाल ने कहा कि अब देश को खनिजों, धातुओं, तेल और गैस के क्षेत्र में भी इसी तरह का एक बड़ा अभियान शुरू करना चाहिए। इससे आत्मनिर्भरता बढ़ेगी और आयात पर निर्भरता कम होगी। साथ ही बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे। उन्होंने इसे “धरती के नीचे की हरित क्रांति” बताते हुए कहा कि भारत के कुल आयात का लगभग 50% हिस्सा धरती के नीचे मौजूद संसाधनों से जुड़ा है, जबकि देश के पास दुनिया के सबसे समृद्ध भू-वैज्ञानिक भंडारों में से एक है। उन्होंने यह भी कहा कि नीतिगत समर्थन, सरकारी एजेंसियों से तेज मंजूरियां, एक्सप्लोरेशन पर आधारित विकास और उद्यमियों पर अधिक भरोसा तेल एवं गैस, तांबा, एल्युमिनियम, सोना, जस्ता, निकेल और महत्वपूर्ण खनिजों जैसे क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को काफी बढ़ा सकते हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत ऊर्जा अधिशेष और विनिर्माण-आधारित वैश्विक शक्ति बनने की क्षमता रखता है।

रेकमेंडेड खबरें >

Success Story: 'लो आ गए', नौकरी छोड़कर गांव लौटे तो लोगों ने दिए ताने,...

India Soymeal Export: भारत ने रद्द किया यह कॉन्ट्रैक्ट, 2021 के बाद...

Hormuz Crisis: भारत के लिए यह मुस्लिम देश बेहद अहम, 11,479 करोड़ का...

India Forex Saving: भारत में 7, अमेरिका में 16, इस एक कदम से बच जाए...

Critical Minerals Supply: चीन की चही

Advertisement

Advertiseme

धरती पर होने वाले निवेश पर भी उन्होंने कुछ संदेश दिया है। उन्होंने कहा है “भारत को
माई दूसरे देशों में नौकरियां पैदा करने के लिए नहीं भेजनी चाहिए।” अनिल अग्रवाल ने
टेड (HZL) और बाल्को (BALCO) के बदलाव का उदाहरण देते हुए कहा कि उद्यमिता,
न की स्वतंत्रता ने बड़े पैमाने पर उत्पादन बढ़ाने, रोजगार सृजन करने और डाउनस्ट्रीम
म विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बताया कि भारत का जस्ता उत्पादन
न से बढ़कर करीब 30 लाख टन तक पहुंच गया, जबकि बाल्को में एल्युमिनियम उत्पादन 1
अब 60 लाख टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

Advertisement

उद्यमियों पर भरोसा कीजिए

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनिल अग्रवाल ने कहा, "आज अगर भारत 100 रुपये कमाता है, तो उसमें से लगभग 50 रुपये संसाधनों के आयात पर विदेश चले जाते हैं। उद्यमियों पर भरोसा कीजिए... जब भी सरकार ने उद्यमियों पर भरोसा किया है, उन्होंने विश्वस्तरीय परिणाम दिए हैं। भारत को सबसे ज्यादा जरूरत है- खोज, खोज और खोज की। हमारे पास भू-वैज्ञानिक क्षमता, युवा शक्ति, तकनीक और वह सामर्थ्य है, जिससे भारत ऊर्जा अधिशेष और विनिर्माण आधारित राष्ट्र बन सकता है।"

लेखक के बारे में
शिशिर चौरसिया
शिशिर कुमार चौरसिया नवभारत टाइम्स डिजिटल (NBT.in) में बिजनेस एडिटर की भूमिका में हैं। उनके पास वित्तीय पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने का 27 साल से भी अधिक का अनुभव है। वह मार्च 2020 में नवभारत टाइम्स से जुड़े और तभी से बिजनेस टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। पत्रकारिता करियर के दौरान उन्होंने कें ... और पढ़ें

कन्वर्सेशन शुरू करें | कमेंट पोस्ट करें